SPIJE , ISSN 2231 – 2323 (Print), 2231 – 2404 (Online)
Vol.4, No.2, July 2014, pp 86 - 91.

उत्तर प्रदेश में विभिन्न शिक्षा परिषदों द्वारा निर्धारित नागरिक शास्त्र की पाठ्यचर्या का राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 के सन्दर्भ में अध्ययन

(**रश्मि श्रीवास्तव**, शोधछात्रा, शिक्षा संकाय, कमच्छा, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी–221010
Email ID: - rashmi.sri.8jan@gmail.com)

Abstract

In school, the education of civics is available to the students as their curriculum or syllabus to develop a kind of civic sense and democratic values in them. Civics curriculum helps the students to be a good citizen by making them aware of their duties, responsibilities and rights for sustenance and also civics as curriculum develops social, political, intellectual and religious understanding to the students. The various subjects which are included as curriculum in the school level for students as a teaching –part is decide through the NCF, It"s the responsibility of the NCF to select theme, structure and content of the curriculum is according to the behalf norms of NCF. To decide civics curriculum at upper primary level, NCF-2005 suggested various symbolic elements to be compulsory included in the subject content that is prepared according to the decided curriculum of various council of boards. In this paper we discuss the comparative analysis of Civics Curriculum and its symbolic elements with NCF -2005 (special reference of the 8th class) which is going on various boards of Uttar Pradesh is performed.

Key words: Curriculum, NCF-2005, Civics Curriculum of Various Boards.

भूमिका

शिक्षण अधिगम प्रकिया के तीन प्रमुख स्तम्भ हैं – शिक्षक, शिक्षार्थी एवं पाठ्यचर्या, शिक्षण की प्रकिया में शिक्षक पाठ्यचर्या के माध्यम से शिक्षार्थी को जीवन के विभिन्न क्षेत्रों का ज्ञान प्रदान करता है। यूँ भी कहा जा सकता है पाठ्यचर्या एक ऐसी योजना है जिससे विद्यार्थियों को सीखने में सुगमता होती है।

वास्तव में यह योजना (पाठ्यचर्या) वहाँ से शुरू होती है जहाँ शिक्षार्थी होता है, यह सीखने के उन सभी आयामों और बिन्दुओं को सूचीबद्ध करती है, जो जरूरी है, साथ ही यह कारण भी प्रस्तुत करती है सीखना क्यों जरूरी है और यह किन–किन उद्देश्यों की पूर्ति करेगा।

पाठ्यचर्या को परिभाषित करते हुये राल्फ टेलर (1949) ने अपनी पुस्तक ''पाठ्यचर्या एवं शिक्षण के मूलभूत सिद्धान्त'' में पाठ्यचर्या को नियोजित गतिविधियों का एक समूह बताया है, जो विशिष्ट उद्देश्यों को क्रियान्वित करने के लिए डिजाइन की गई हो, व जिसमें महत्वपूर्ण अवयव जैसे विषयवस्तु के सन्दर्भ में क्या पढ़ाया जाये और कैसा ज्ञान, कुशलताएँ एवं व्यवहार दिया जाये, ये सब शामिल है। (एन0सी0एफ0–2005, आधार पत्र, पाठ्यचर्या, पाठ्यचर्या एवं पाठ्यपुस्तक) पाठ्यचर्या, व्यक्ति और समाज के लिए शैक्षिक लक्ष्यों की व्याख्या करती है, और इस प्रकार की समझ विकसित करती है कि विद्यालयों में विद्यार्थी को किस प्रकार पढ़ाया जाये।

पाठ्यचर्या निर्धारण का उद्देश्य : एन0सी0एफ0 (2005) में भारतीय संविधान की प्रस्तावना को आधार (जिसमें कहा गया है हम सब भारत के लोग भारत को प्रभुत्व सम्पन्न, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष, लोकतान्त्रिक गणराज्य बनाने की कामना करते हैं) मानकर पाठ्यचर्या निर्धारण के दो प्रमुख उद्देश्य बताये हैं –

1. पूरे समाज की सामाजिक, राजनैतिक अपेक्षाओं को प्रतिबंधित करता हुआ पाठ्यक्रम या पाठ्यचर्या।
2. प्रशिक्षण प्रणाली द्वारा शिक्षक को पाठ्य–सामग्री एवं शिक्षण पद्धितयों के चुनने के लिए पर्याप्त दिशा–निर्देश का सार्थक शिक्षाशास्त्रीय स्वरूप या लक्ष्य तय करने में सहायता करना।

© 2013 AAEBHU

पाठ्यचर्या का निर्धारण किस प्रकार हो – भारत एक भौगोलिक, सांस्कृतिक, सामाजिक विभिन्नताओं वाला देश है, जिसमें कुछ किलोमीटर की दूरियाँ बदलते ही, सांस्कृतिक, सामाजिक परिर्वतन स्पष्ट नजर आने लगते हैं, ऐसे में विभिन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक विभिन्नताओं वाले क्षेत्रों से आने वाले विद्यार्थियों को एक समान पाठ्यचर्या से शिक्षा देना या विकसित करना एक यक्ष प्रश्न है।

सम्पूर्ण भारत में विद्यालय स्तर पर पाठ्यचर्या किस प्रकार हो, उसका स्वरूप कैसा हो, सभी प्रकार के विद्यालयों में एक जैसा हो या विभिन्नता लिये हुये हो, माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952–53) ने विद्यालय स्तर पर पाठ्यचर्या को विभिन्न विषयों में न विभाजित करके प्रांसगिक एवं महत्वपूर्ण विषयों की एक साथ करके शिक्षा देने की सिफारिश की, साथ ही विभिन्न प्रकार के विद्यालयों को पाठ्यचर्या निर्धारण व चयन की पूर्ण स्वतन्त्रता देने की बात कही। 1964–66 के अनुसार पाठ्यचर्या का निर्धारण एवं निर्माण राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर होना चाहिए।

शिक्षा बिना बोझ के (1993) मे जिला, राज्य तथा राष्ट्र स्तर पर विद्यालयों के प्रमुखों को सक्रिय योगदान देते हुये विद्यालयों के लिए पाठ्यचर्या का निर्धारण करना चाहिए।यादव (2007) ने अपने शैक्षिक लेखलोकतंत्र एवं राजनीति विज्ञान की शिक्षा में लोकतंत्र एवं शिक्षा के प्रत्यक्ष सम्बन्ध बताते हुए वर्तमान में चल रही नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तकों के संदर्भ में विभिन्न सुझाव दिये, जिसमें से प्रमुख हैं– पाठ्यपुस्तक में वास्तविक एवं व्यावहारिक ज्ञान को प्राथमिकता देना, पाठ्यवस्तु में वास्तविक जीवन अनुभव, स्कूल वातावरण एवं औपचारिक शिक्षा का समन्वय लोकतंत्र के साथ हो, एवं व्यावहारिक ज्ञान को देने के लिये वास्तविक जीवन से है जैसे बाजार मीडिया व टेलीविजन इत्यादि को सम्मलित किया जाना चाहिए। नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तक में भारत एवं विश्व की राजनीति की चर्चा की जाये व इस प्रकार का शिक्षण किया जाये जिससे वास्तविक लोकतंत्र स्थापित हो सके।

राम लाल चन्द्र (2005) ने पाठ्यपुस्तक निर्माण और शैक्षिक विसंगतियों नामक लेख में पाठ्यवस्तु की महत्ता देते हुए लिखा कि पाठ्यपुस्तकों में लोकतांत्रिक जीवन की बढ़ती उपयोगिता से सम्बन्धित विभिन्न मुद्दे जैसे स्त्री विमर्श, दलित विमर्श आदि विषयों को सम्मलित किया जाना चाहिए।

कुमार ललित (1996) ने अपने लेख राष्ट्रीय एवं भावात्मक शिक्षा में लिखा है कि शिक्षा के प्रत्येक स्तर की पाठ्यचर्या में ऐसे विषयों को सम्मिलित किया जाना चाहिए जिससे अच्छे नागरिक भावों के साथ – धर्मनिरपेक्ष, विश्वबन्धुत्व, सामाजिक स्वतंत्रता आदि गुणों का विकास हो। विश्वकर्मा (1996) पाठ्यक्रम में ऐसे बिन्दुओं को विद्यार्थियों के सम्मुख दैनिक जीवन शैली से जोड़कर प्रस्तुत करना चाहिए जिससे लोकतांत्रिक लक्ष्य की प्राप्ति हो सके।

सम्पूर्णानन्द समिति (1961) सामाजिक जीवन की पुस्तकों में राष्ट्रीय एकीकरण तथा भावात्मक विषयों के विकास पर बल मिले जैसे विषय को सम्मलित किया जाना चाहिए जिससे भावात्मक एकता को बल मिले, राष्ट्रीय एकीकरण की भावना विकसित हो व सामाजिक समझ की भावना में बढ़ोत्तरी हो।

पाठ्यचर्या निर्धारण के आवश्यक तत्व

एन0पी0इ0 (1986) ने पाठ्यचर्या में (निर्धारण करते समय) समानता, स्वतन्त्रता, समाज, लैगिक समानता, सामाजिक कुरीतियों के विरूद्ध, पर्यावरण की सुरक्षा, भारत तथा अन्य देशों के साथ सह सम्बन्ध एवं शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व जैसे विषयों को सम्मिलित करना आवश्यक माना है। एन0सी0एफ0 (2005) ने पाठ्यचर्या के निर्धारण इस प्रकार से हो जिससे विद्यार्थियों में समानता–स्तर एवं अवसर की, स्वतन्त्रता–विचारों एवं अभिव्यक्ति की विश्वास एवं आस्था की, जीवन मूल्यों को विकसित करने की, निर्णय लेने की, दूसरों का सम्मान करने की, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक न्याय से सम्बन्धित मूल्यों को विकसित करने की भावना विकसित हो सके।

उच्च प्राथमिक स्तर पर नागरिक शास्त्र की पाठ्यचर्या का निर्धारण

नागरिक शास्त्र अंग्रेजी के सिविक्स शब्द का हिन्दी रूपान्तर है सिविक्स शब्द सिविस और सिविटास से

बना है जिसका अर्थ क्रमशः नागरिक एवं नगर राज्य होता है। अतः नागरिक शास्त्र शब्द का अर्थ, नगर राज्य का नागरिक या सदस्य। अतः नगर राज्यों के केन्द्र में मनुष्यों के सामाजिक जीवन का अध्ययन करने वाले विषय को नागरिक शास्त्र कहते हैं। नागरिक शास्त्र को प्रायः सामुदायिक नागरिक शास्त्र के नाम से पुकारा जाता है जिसमें सामाजिक वातावरण के प्रति छात्रों या छात्र के सम्बन्ध पर बल दिया जाता है। इस प्रकार, सामाजिक वातावरण के अन्तर्गत स्थानीय, ग्रामीण, नगरीय, राज्यीय तथा राष्ट्रीय समुदाय आते हैं (वाइनिंग एण्ड वाइनिंग, 1985)

नागरिक शास्त्र शब्द नगरीय या दासीय प्रथा का द्योतक प्रतीत होता है, जिसमें हमारे उपनिवेशिक संस्कृति की झलक प्रस्तुत होती है अतः विद्यार्थियों की नागरिक शास्त्र के स्थान पर विद्यालयों में राजनीति विज्ञान विषय पढ़ाया जाना चाहिए (जैन, 1999)। एन0सी0एफ0 (2005) में नागरिक शास्त्र विषय के स्थान पर राजनीति विज्ञान शब्द का प्रयोग करने की बात कही गई क्योंकि वर्तमान में नागरिकों को अधिकार एवं कर्तव्यों के साथ सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन की समझ, समस्यायें, समस्याओं को दूर करने के उपाय, सामाजिक आर्थिक कारणों के आधार पर सोचने समझने की शक्ति एवं दूरदर्शिता व जागरूकता उत्पन्न करना है।

शिक्षा आयोग (1964–66) ने इसी अवधारणा को आवश्यक मानते हुये। पाठ्यक्रम में (अपर प्राइमरी स्तर पर) सामाजिक अध्ययन में इतिहास, भूगोल के साथ नागरिकशास्त्र को भी स्थान दिये जाने को कहा। आयोग के अनुसार नागरिक शास्त्र का प्रभावी अध्ययन भारत में उत्तम नागरिकता तथा भावात्मक एकीकरण के लिये अनिवार्य है।

नागरिक शास्त्र विषय को विद्यालय पाठ्यक्रमों में (यू0पी0) में स्थान देने का समर्थन करते हुए इ0एम0 वाईट ने कहा हमारी सभ्यता की महत्वपूर्ण विशेषता जीवन को प्रजातान्त्रिक ढंग से सुरक्षित एवं उत्तम बनाना है, नागरिक शास्त्र विषय प्रारम्भ से बालकों को उत्तम प्रकार का प्रशिक्षण प्रदान करता है व उचित प्रकार की सामाजिक एवं वैयक्तिक आदतों का निर्माण करता है। (त्यागी–2005)

उच्च प्राथमिक स्तर पर (कक्षा आठ के सन्दर्भ में) की नागरिक शास्त्र की पाठ्यचर्या हेतु एन0सी0एफ0 2005 द्वारा निर्धारित तत्व :–

नागरिक शास्त्र विषय के अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों में मानवीय मूल्यों के प्रति संवेदना, आपसी प्रेम एवं सद्भावना व्यक्तिगत विभिन्नता के प्रति विश्वास एवं स्वतन्त्रता के भावों का नैतिक एवं मानसिक विश्लेषण चिन्तन को विकसित करना है। एन0सी0एफ0 (2005) के अनुसार नागरिक शास्त्र की पाठ्यचर्या का निर्धारण करते समय ऐसे विषयों को सम्मिलित किया जाना चाहिए जिससे विद्यार्थियों में नागरिक भाव एवं लोकतान्त्रिक मूल्यों का विकास हो सके।

1. एन0सी0एफ0 2005 के अनुसार उच्च प्राथमिक स्तर पर नागरिक शास्त्र की पाठ्यचर्या का निर्धारण करते समय पाठ्यचर्या में क्षेत्रीय, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर कार्यपालिका, कार्यपालिका की कार्यप्रणाली एवं वैश्विक शान्ति के दृष्टिकोण को विकसित करने वाले विषय को सम्मिलित करना।
2. एन0सी0एफ0 2005 के अनुसार उच्च प्राथमिक स्तर पर नागरिक शास्त्र की पाठ्यचर्या का निर्धारण करते समय पाठ्यचर्या में आर्थिक संस्थानों जैसे परिवार, बाजार तथा राज्य के प्रति पर्यवेक्षणात्मक दृष्टिकोण विकसित करने वाले विषय को सम्मिलित करना।
3. एन0सी0एफ0 2005 के अनुसार उच्च प्राथमिक स्तर पर नागरिक शास्त्र की पाठ्यचर्या का निर्धारण करते समय पाठ्यचर्या में समाज में हाशिये के बाहर रह रहे लोगों की समस्यायें, लैंगिक समानता, अनुसूचित जाति एवं जनजाति से सम्बन्धित विषयों को सम्मिलित करना।
4. एन0सी0एफ0 2005 के अनुसार उच्च प्राथमिक स्तर की पाठ्यचर्या का निर्धारण करते समय पाठ्यचर्या में सामाजिक एवं राजनैतिक संस्थानों की गति या कार्यशैली एवं उनका देश की विकास प्रक्रिया में योगदान देने वाले विषय को सम्मिलित करना।

निम्नांकित बिन्दुओं को ध्यान में रखकर वर्तमान उत्तर प्रदेश में (वर्तमान में) प्रचलित यू0पी0 बोर्ड, सी0बी0एस0सी0 बोर्ड तथा आई0एस0सी0 बोर्ड की नागरिक शास्त्र की पाठ्यचर्या (कक्षा आठ के विशेष सन्दर्भ में) का तुलनात्मक विश्लेषण :–

1. उत्तर प्रदेश परिषदीय विद्यालयों में प्रचलित नागरिक शास्त्र की पाठ्यचर्या में उपस्थित तत्वों एवं एन0सी0एफ0 2005 द्वारा निर्धारित तत्वों का तुलनात्मक विश्लेषण :–

1. उत्तर प्रदेश परिषदीय विद्यालयों की कक्षा आठ के नागरिक शास्त्र की पाठ्यचर्या का प्रथम अध्याय है हमारा लोकतन्त्र जिसमें स्वतन्त्रता, समानता, मूलअधिकार, सूचना का अधिकार लैगिक समानता तथा जनलोकतान्त्रिक जनसंगठनों एवं जागरूकता को विकसित करने वाले विषयों पर आधारित है।
2. उत्तर प्रदेश परिषदीय विद्यालयों की कक्षा आठ की नागरिक शास्त्र की पाठ्यचर्या के द्वितीय अध्याय (संयुक्त राष्ट्रसंघ) एवं तृतीय अध्याय (देश की सुरक्षा एवं विदेशनीति) में अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति एवं सहयोग राष्ट्रीय महत्व के विषय, भारत का विदेशी राज्यों के साथ सम्बन्ध, भारत का विश्वशान्ति एवं वैश्विक कल्याण में योगदान देने वाले विषयों पर आधारित है।
3. उत्तर प्रदेश परिषदीय विद्यालयों की कक्षा आठ की नागरिक शास्त्र की पाठ्यचर्या का चतुर्थ अध्याय नागरिक सुरक्षा एवं पंचम अध्याय विकलांगता एवं विकलांगता के कारण हैं जिसमें नागरिकों की सुरक्षा एवं सावधानी, विकलंगता के कारण व बचाव तथा उनको जन सामान्य के साथ समान व्यवहार आदि विषयों पर आधारित हैं।

तुलनात्मक विवेचना :–

1. उत्तर प्रदेश परिषदीय विद्यालयों में प्रचलित नागरिक शास्त्र की पाठ्यचर्या में एन0सी0एफ0 (2005) द्वारा निर्धारित तत्वों में से समानता, स्वतन्त्रता, लैंगिक समानता, मूल अधिकार अर्थात नागरिकों के कर्तव्य एवं अधिकार, राष्ट्रीय महत्व, भारत का विश्व शान्ति में योगदान, वैश्विक कल्याण में योगदान मानवीय संवेदना, जन कल्याण एवं जनजागरूकता, नागरिक सुरक्षा जैसे विषयों को सम्मिलित किया गया हैं।
2. उत्तर प्रदेश परिषदीय विद्यालयों की नागरिक शास्त्र की पाठ्यचर्या में एन0सी0एफ0 (2005) के अनुसार आर्थिक संस्थाओं जैसे परिवार, बाजार तथा राज्य के प्रति पर्यवेक्षणात्मक दृष्टिकोण विकसित करने वाले विषय, अनुसूचित जातियों तथा जनजातियों की समस्यायें, नवीन परिस्थिति के अनुसार सीखने की क्षमता, पर्यावरणीय विषय जैसे वायुप्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण एवं आतंकवाद जैसे विषयों का अभाव है।

2. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद, नई दिल्ली से संबन्धित विद्यालयों में प्रचलित नागरिक शास्त्र की पाठ्यचर्या में उपस्थिति तत्व एवं एन0सी0एफ (2005) द्वारा निर्धारित तत्वों का तुलनात्मक विश्लेषण :–

1. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद, नई दिल्ली की नागरिक शास्त्र की पाठ्यचर्या का प्रथम अध्याय भारतीय संविधान एवं धर्म निरपेक्षता है जिसमें भारतीय संविधान में निहित मूल्य, स्वतन्त्रता, समानता, मूल अधिकार, लैंगिक समानता, नागरिकों के कर्तव्य एवं अधिकार केन्द्र राज्य के मध्य कार्यपालिका की शक्तियों का बँटवारा, सर्वधर्म सम्भाव जैसे विषय सम्मिलित हैं।
2. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद, नई दिल्ली की नागरिक शास्त्र की पाठ्यचर्या का दूसरा अध्याय संसद एवं कानूनों का निर्माण है, जिसमें हमें संसद क्यों चाहिए तथा कानूनों का निर्माण विषयों पर आधारित हैं, जिसमें लोगों द्वारा फैसला लेना, जन जागरूकता, राजनैतिक सहभागिता, राज्य सरकार तथा राष्ट्रीय सरकार की कार्य प्रणाली जैसे विषयों को सम्मिलित किया गया।
3. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद, नई दिल्ली की नागरिक शास्त्र की पाठ्यचर्या का तृतीय अध्याय ''हमारी न्याय प्रणाली एवं अपराधीकरण प्रणाली से सम्बन्धित है जिसमें नागरिकों के अधिकार, नागरिकों के हितों एवं उनकी सुरक्षा, सामाजिक न्याय जैसे संवेदनशील विषयों की प्रधानता है।
4. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद, नई दिल्ली की नागरिक शास्त्र की पाठ्यचर्या का चतुर्थ अध्याय

हाशियाकरण की समझ तथा हाशियाकरण से निपटने जैसे विषयों पर आधारित है जिसमें समाज के बहिस्कृत लोगों की समस्यायें, समानता का अधिकार, स्वास्थ्य की रक्षा तथा मानवीय संवेदनायें जैसे विषय सम्मिलित हैं।

5. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद, नई दिल्ली की नागरिक शास्त्र की पाठ्यचर्या का पंचम अध्याय आर्थिक क्षेत्र में सरकार की भूमिका एवं जन सुविधायें हैं जिसमें बाल अधिकार, सरकार का व्यक्तियों के स्वास्थ्य के प्रति योगदान, स्त्रियों के अधिकार, पर्यावरण की रक्षा, स्वच्छता एवं मानवीय संवेदनायें जिससे संबधित विषयों को रखा गया है।

तुलनात्मक विवेचना

1. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद की नागरिक शास्त्र की पाठ्यचर्या में एन0सी0एफ0 (2005) के द्वारा निर्धारित तत्वों में से भारतीय संविधान में निहित मूल अधिकार, स्वतन्त्रता समानता, सर्वधर्म सम्भाव, लैगिक समानता, क्षेत्रीय राज्य, राष्ट्र स्तर पर कार्यपालिका की कार्य प्रणाली, राजनैतिक सहभागिता, नागरिकों के अधिकार एवं दायित्व, सामाजिक न्याय, अनुसूचित जाति एवं जन जाति की समस्यायें आर्थिक सामाजिक विषय पर जन संगठनों की भूमिका जैसे विषय सम्मिलित हैं।

2. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा नागरिक शास्त्र की पाठ्यचर्या में एन0सी0एफ0 (2005) के द्वारा निर्धारण हेतु आवश्यक तत्वों में से वैश्विक कल्याण में भारत की भूमिका, वैश्विक समस्यायें, विकलंगता, भारत का पड़ोसी राज्यों के साथ सह सम्बन्ध, शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व, बाजार तथा राज्य के प्रति पर्यवेक्षात्मक दृष्टिकोण विकसित करने वाले विषयों का अभाव है।

3. आई0सी0एस0ई0 विद्यालयों में प्रचलित नागरिक शास्त्र की पाठ्यचर्या में उपस्थित तत्वों एवं एन0सी0एफ0 2005 द्वारा निर्धारित तत्वों का तुलनात्मक विश्लेषण

1. **आई0सी0एस0ई0** बोर्ड की नागरिक शास्त्र की पाठ्यचर्या के प्रथम अध्याय में विश्व एक परिवार के रूप में विभिन्न विषयों को सम्मिलित किया गया है। जिसमें पर्यावरणीय विषय, जनसंख्या वृद्धि, विश्व को हथियारों से होने वाले नुकसान जैसे विषयों को सम्मिलित किया गया है।

2. **आई0सी0एस0ई0** बोर्ड की नागरिक शास्त्र की पाठ्यचर्या द्वितीय अध्याय में संयुक्त राष्ट्र संघ से सम्बन्धित विषयों को शामिल किया गया है, जिसमें विश्व को संरक्षण देने वाली संस्थाएँ, राजनैतिक संस्थाओं की कार्यप्रणाली, जन कल्याण एवं जागरूकता जैसे विषयों पर आधारित है।

3. **आई0सी0एस0ई0** बोर्ड की नागरिक शास्त्र की पाठ्यचर्या तृतीय अध्याय में भारत एवं विश्व के साथ उसके सम्बन्ध पर आधारित विषयों पर शामिल किया गया है जिसमें भारत का शान्तिपूर्ण व्यवहार, वैश्विक जनकल्याण, सह अस्तित्व की भावना का सम्मान, जन जागरूकता जैसे विषयों पर आधारित है।

तुलनात्मक विवेचना

1. आई0सी0एस0सी बोर्ड द्वारा नागरिक शास्त्र की पाठ्यचर्या में एन0सी0एफ0 (2005) के द्वारा निर्धारण हेतु आवश्यक वर्णित तत्वों में वैश्विक कल्याण में भारत के योगदान, वैश्विक नागरिकता जनसंख्या वृद्धि की समस्यायें, भारत का अन्य देशों के साथ सम्बन्ध शन्तिपूर्ण सहअस्तित्व आर्थिक संगठन, वैश्विक समानता, वैश्विक स्वतन्त्रता, पर्यावरणीय विषयों पर आधारित है।

2. आई0सी0एस0सी बोर्ड द्वारा निर्धारित नागरिक शास्त्र की पाठ्यचर्या में एन0सी0एफ0 (2005) के द्वारा निर्धारण हेतु आवश्यक बिन्दुओं में से व्यक्तिगत विभिन्नता का सम्मान, लैंगिक एवं अवसर समानता स्वतन्त्रता, क्षेत्रिय समस्याएँ, राज्य स्तर तथा राष्ट्रीय स्तर पर समस्याएँ, संवैधानिक, कार्यप्रणाली, नागरिकों को अधिकार एवं कर्तव्यों तथा अनुसूचित जाति एवं जनजाति की समस्यायें, मानवीय संवेदनाओं, भारतीय सामाजिक राजनीतिक परिवेश से सम्बनिधत विषयों का अभाव है।

निष्कर्ष :–शिक्षण के उद्देश्यों (साध्य) को विद्यार्थियों में समाहित करने के लिए पाठयचर्या एक साधन है, अतः शैक्षिक उद्देश्यों को ध्यान रखते हुये पाठ्यचर्या का निर्माण किया जाता है। बदलते समाज में स्वतन्त्रता, समानता, भातृत्व की भावना एवं वैश्विक दृष्टिकोण को विकसित करने हेतु नागरिक शास्त्र एक आधार विषय है। नागरिक शास्त्र विषय के माध्यम से नागरिकों में कर्तव्य, अधिकार एवं विभिन्न लोकतान्त्रिक गुणों को विकसित करने में सहायता मिलती है।

नागरिक शास्त्र की पाठ्यचर्या के माध्यम से जहाँ एक ओर विद्यार्थियों में कर्तव्यों की पालन की भावना, अधिकारों के प्रति संचेतना, बाल अधिकार, मानवीय संवेदना, स्त्रियों का सम्मान, सृजनात्मकता को विकसित किया जा सकता है, वहीं पर उन सभी गतिविधियों/प्रवृत्तियों के प्रभाव को कम किया जा सकता है जो विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के पूर्ण विकास करने में बाधा उत्पन्न करती है।

एन0सी0एफ0 (2005) के पाठ्यचर्या निर्धारण का उद्देश्य भारत में एक समान पाठ्यचर्या का निर्धारण करना है, जिससे सम्पूर्ण भारत में एक समान मूल्यों को विकसित करने वाली पाठ्यचर्या का विकास हो सके। पर्याप्त विविधिता (पाठ्यचर्या में) होने के बावजूद यह सम्भावना व्यक्त की जाती है कि आने वाले वर्षों में एक समान मूल्यों (नागरिक शिक्षा के विशेष सन्दर्भ में) को विकसित करने वाली पाठ्यचर्या का निर्माण हो सकेगा व विद्यार्थियों में उन्नत सामाजिक व नागरिक भाव तथा लोकतान्त्रिक मूल्यों का विकास हो सकेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भारत सरकार (1993). लर्निंग बिदाउट बर्डन, रिपोर्ट ऑफ दि नेशनल एडवाइजरी कमेटी, **मानव संसाधन विकास मन्त्रालय,** नई दिल्ली, उद्धरित एन0सी0आर0टी0 (2008)। नेशनल करीकुलम फ्रेम वर्क – 2005 नई दिल्ली।
2. गुप्ता, एस0 पी0. (2005).**भारतीय शिक्षा इतिहास विकास एवं समस्यायें.** इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।
3. आई0सी0एस0ई0 (2009). **डिस्कवर हिस्ट्री एवं सिविक्स–8,**हैदराबाद : ओरिन्टल ब्लैकशवान प्रा0 लि0।
4. कुमार, एल. (1996). **राष्ट्रीय एवं भावात्मक एकीकरण की शिक्षा,** पृ0 सं01–3, , नई दिल्ली : एन0सी0आर0टी0 ।
5. लालचन्द्र, राम. (2005). **परिच्छेद,** अप्रैल (2005) पृ0 सं0 51–60, एन0 ई0 यू0 पी0 ए0।
6. **नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर स्कूल एजूकेशन** (2008). नई दिल्ली : एन0सी0ई0आर0टी0।
7. **नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क** – (2005). नई दिल्ली : एन0सी0ई0आर0टी0।
8. एन0सी0 ई0आर0टी0, (2008)। **सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन – III**, नई दिल्ली।
9. प्रताप, विश्वकर्मा. (1996). उद्धवरित कुमार ,ललित. (1996).**राष्ट्रीय एवं भावात्मक एकीकरण की शिक्षा,** पृ0 सं01–3, , नई दिल्ली : एन0सी0आर0टी0।
10. टाइलर, आर डब्लू . (1949). बेसिक प्रिंसिपल ऑफ करिकुलम एण्ड एस्ट्रक्शन, शिकागों : यूनीवर्सिटी प्रेस ऑफ शिकागो उद्वरित एन0सी0आर0टी0 (2008), **राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005,** आधार पत्र, पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक, नई दिल्ली।
11. उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद, (2011).**हमारा इतिहास और नागरिक शास्त्र–8** मथुरा : महेश पुस्तकालय पंजबटी।
12. विंच ,क्रिस्टोफर .(1977).**शिक्षा दर्शन में मुख्य अवधारणायें**, लन्दनः रूटलेज प्रेस।
13. यादव ,योगेन्द्र .(2007). **शैक्षिक सन्दर्भ**, अंक 4 मूल अंक 61, नई दिल्ली : एन0सी0आर0टी0।